

विष्णुपुस्तक

आशा कस्तूरि	
82	

ॐ नमो श्रीवज्रसत्वायः॥

१२ नमः श्रीवक्रसत्वाय ॥ ॐ ॥ श्री ॥ नमः ॥ ॐ ॥
गंगापिपु क्रियासाह ॥ ॐ ॥ गंगपिपुदानकर्तृकामायकृता
नमः आदावाचार्यपत्रीरुयग ॥ सचकथंरुग ॥ संयमः ॥ चि
शुद्धात्माकिर्गद्विय ॥ सुमानसे ॥ वृत्तानिनासासंनुष्टीकि
यावान् सुविचरु ॥ १ ॥ सचवगुत्तुथाद्वचस्त्रापथसुसमाहिग ॥
एवं च्छु चयकुर्द सक्तुयं पिगगग ॥ ॐ ॥ इच्छात्माव

चक्रकृतावकासीकलहप्रिय ॥ असुरुकाशुचित्रकृत्त
वगुत्तुवृत्तयग ॥ निनासापिगगंयाकिदाताजाननकंवक्रु
गगपूर्वयष्टादोनखक ॥ १ ॥ दिक्कदायत्वाशुचिस्त्रानकृत्त
ग ॥ न्वचिथ ॥ पूर्वयष्टाकृतार्कचक्राचार्यादिनिमक्तुयग ॥
पयष्टागकाक्षनीर्धगत्वा सुचिस्त्रानकृत्त ॥ गुत्तु ॥ १ ॥
मथापलिफायात्तुवात्तुकासकायचिस्त्रागत्तुपनिदीय

वर्तिकां स्तुपयेत्वा श्रीसूर्यार्घ्यं दद्यात् ॥ चन्द्रनपूष्पकंप्रक्रि
यत् ॥ यजमानस्य विजिचन्द्रनपूष्पं स्तोत्रं यत् ॥ ॐ विजिचि
न्द्रनैदद्यात् ॥ विजिसिपूष्पं दद्यात् ॥ विधेः श्रुत्वा कोऽपि न दूतं प्रक्रि
यत् ॥ नमो बुधाय रक्षायक ॥ इति कुण्डलशायलाकारगण
संज्ञितं पूर्वातिमूर्खात्स्वाचमूर्धं सूर्याय दद्यात् ॥ महादा
नवाब्धं यत् ॥ ॐ शुभश्रीमन्कोशीशक्तसिंहगणगणप

र्याय रत्नकल्पसहस्रनामला कथा गोवेव स्वस्वन्वक्तव्यं सूर्य
गादापयार्कं कलियुगप्रथमचरत् ॥ रत्नगणवत्पुत्रकृत्तपाश्र्मभय
हेमवत्यादिवासकोशेन उपचक्रदाहपो ॥ १० ॥ आर्यावर्कपूष्प
मो कर्कटिकनागनाका लयमागवासातिथि महाद्वन्द्वं श्रीस्वयं
चैत्यस्तु नमो श्रीगुरुभ्यो नमो प्रज्ञापानिगाधिदिगं श्रीमन्मन्त्र
याधिदिगं रत्नमो नमो लसत्पुल्लश्रीसत्त्वप्रसन्नपुलाकाय रत्न

दिशागिनीगणगुणिशम्भुसामृत्काष्ठेयवसिंहिनीव्याघ्रिणी
गणेशकृष्णायमहाकाशहीनीगीहनुतद्वेषकारगणसंहर्तगु
प्तपालनकर्तृगललिंगपत्तनश्रीमदार्यावलाकिर्तव्यविजयना
म्भ॥शुभ॥दानयमत्पादि॥श्रीसूर्यायकृतार्घ्यनमः॥पादार्घ्यं
मः॥प्रत्यर्घ्यंनमः॥लंखस्वपागय॥धूंकन॥श्रीसूर्याययकधूपंनमः॥
जादिलंखभालन॥श्रीसूर्यायपाशंप्रतीकस्वाहा॥स्वांगुल

वाय॥ आदित्याय स्वाहा॥ शमाय स्वाहा॥ मृगशाय स्वाहा॥ वृक्ष
य स्वाहा॥ ब्रह्मगये स्वाहा॥ शुक्राय स्वाहा॥ अग्निशाय स्वाहा॥
गार्हपत्ये स्वाहा॥ केशवे स्वाहा॥ सिद्धऋकंकाऋतुं स्वाहा॥ श्रीसूर्याय
नमः॥ चन्द्रनेत्राय नमः॥ यक्षाय नमः॥ यक्षपुष्पे नमः॥ गायत्र्याय॥
ॐ धर्मा ५॥ किं नमः॥ गुं नमः॥ श्रीसूर्याय॥ ऊवाकसुसंकाशंका
७५ पायं महाश्रुति॥ गंभोति सर्वपापविघ्नहृत्प्रलमातिदिवाक

यं॥ गं॥ धूमिकर्मयाय नमः॥ लपालसाकिधायक॥ आकिलं ख
आनकं॥ मृगशाय॥ गुत्पादार्धकाय॥ गुत्पादार्धनमः॥ प्रत्यर्थन
मः॥ आकिगुत्पाय नमः॥ रक्काहंत्वां नमस्तस्मिन् गुत्पा नाथ प्रसीद
त॥ चिथआकिनिचकस्वां॥ वज्राचार्याय चन्द्रनेत्राय नमः॥ वज्राचार्या
य पुष्पे नमः॥ गंगा पूजाय नमः॥ गुत्पा मृगलादिलाकषा
नवलिंदापथम्॥ रुद्रमूलनेत्राय नमः॥ दीपं च॥

धनकपलाहिस गथ ॥ ६॥ इद्र पंचासृगः हाम कदा चाकृतमधिग
सं कपलाहनकंपूर्वस्वक ॥ वाक् ॥ गिलाइसगिमृष्टिचक्र १७
नचक्र १७ गथा ॥ मधुना नासिकावाडु क्रिभा देसा धृगमेवा ॥
दधिवेकटिजा नुर्यां गायनहस्तपादयो ॥ मृन्नादौ सर्वगया ॥
जायनधाधिविष्यवान् ॥ जाकि गंका ॥ पिण्डदानमहं कविष्यध
यक ॥ कपलासकृष्णनडमलक ॥ वाक् ॥ मृन्नावृकृष्णग्रामिम

धूसर्पिगिलगथा ॥ दधिक्रीरपना प्राक्ता मृष्टांगपिण्डसंरव ॥
सकृष्णस्वधा ॥ ६॥ इद्र पंचासृगः ॥ समिलासवर्कसंसादया
सधृगसदधिसर्वापकनसहिगायस्वधा ॥ पिण्डकायका ॥ ग्या
कसालक ॥ हा मलगुसाल ॥ रागथयक ॥ उधर्मधगुगंस्वा
हा ॥ चिरादवयागा ॥ प्रविगामहयधाना ॥ पिण्ड
स्वधा ॥ गापात्रा ॥ पिगामह ॥ पिण्डरागंस्वधा ॥

आशुवाग ॥ पिगामह x पिष्टु रागं स्वधा ॥ त्वपिगा x
पिष्टु रागं स्वधा ॥ श्रुव रुपाग ॥ मिता वाग रुलसा ॥ प्र
पिगामही य धाना म्नेन पिष्टु रागं स्वधा ॥ नापा अडि ॥
पिगामही x पिष्टु रागं स्वधा ॥ अडि ॥ स्वमागा x पिष्टु
रागं स्वधा ॥ माम ॥ विकलाय पिष्टु रागं स्वधा ॥
विकलायागा ॥ अपनप रु रुलसा मालका गयक ॥

चिरादव झाचक ॥ जब ५ आष्यग गाय गरु गथा ॥
धर्म आगुजर स्वाहा ॥ पिष्टु झाचक ॥ गपला पाला
गरु गथा ॥ पिष्टु रागं स्वधा ॥ हामलनं ह यथा ॥ सुगिले
ह्यस्वधा ॥ कपला चिल ॥ लाहासिक ॥ धनये गायम
गुप्तमग धूनियाग कृश आसुन गयका ॥ लपगन यवा
का ॥ यथा पूर्व वा धिस्तव चर्यायां चजरि स पूष

त्ययुष्मन्ना विधा ननार्थं अमुकं गुरुः ॥ अस्मन्
धायकं ॥ अस्मन् गुरुमानस्य ॥ दं गुरुल समासासव
॥ भूषां सादृशा गुरुसदृशं सदा श्री सर्वाधिकपञ्चासहिना
अयं धर्म ध्यातुवागीध्वं जलरुद्रा नकायकृष्ण सन
मूपगिष्ठगाम् ॥ कृष्ण वस्तु मूपगिष्ठगाम् ॥ गुरु
स ॥ पञ्चगामा गुरुनकायकृष्ण सन मूपगिष्ठगाम् ॥

मगगया ॥ वेदवर्ण रुरुकायकृष्ण सन मूपगिष्ठगाम्
॥ कृष्ण वस्तु मूपगिष्ठगाम् ॥ रुरुलालपगलीध ॥ वस्तु
जीपगुपागुरयस्वधा ॥ लुरुवहाय ॥ अरिबिं चापु रयस्व
धा ॥ जाकि स्वांगय ॥ ३ सपूषगुरुल धा जरयस्वधा
॥ लाहागन गलारगवना ॥ अधिपगुपागुरयस्वधा ॥
धनचिरगदी आनं गय ॥ अय ॥ कान ॥ ३ विपक्षी धि

रिविविधं तु वक्रं कुरु नन्दनं कमुनि काष्ठं पठाम्य
मुनि प्ररुगिनां धी धर्म धातु बां गीष्ठं जपश्च ह्यहमा
गायत्रे प्रबर्णु न गदवारं दानकस्य सुप्रगिष्ठि गवडासन
॥ लंखनमान ॥ ४५ ॥ दुः पञ्च मृगस्नाना ॥ ३ ॥ यन्मङ्गलं संक
ल्पसत्त्वहादिष्ठि गस्य सत्त्विकस्य जन्मकस्य महासुरवस्य
गन्मङ्गलं रावतु गपयमारि यका अरि यकाय ॥ अरि



201

गारुडाय नमः पाद्याय नमः नार्थं प्रणिच्छ स्वाहा ॥ इति १२ स्वा
 नवाय ॥ ॐ आर्यवलोचनाय स्वाहा ॥ ॐ अशार्याय स्वाहा ॥ ॐ
 हा ॥ ॐ जलसरोवाय स्वाहा ॥ ॐ अमिताय स्वाहा ॥ ॐ
 अमाध्यसिद्धये स्वाहा ॥ ॐ विपश्चिप स्वाहा ॥ ॐ द्विषि वि
 रवक्रकुचन्द कनकमुनिकाष्ठमपठमकमुनये स्वाहा ॥
 ग्वत्तस ॥ नन्दाय स्वाहा ॥ भद्राय स्वाहा ॥ ऊषाय स्वाहा ॥ शो

म्या ५॥ नृकु संबीजसंज्ञा गं ५॥ आरव लवि य ॥ मून रमहामून य
सुरवावत्पां मुनिग कुं नु साहा ॥ जाकिलं रव कयो डी स्व हो वि
यो नाता ॥ यथा दीमान् अन्नं संकल्पसिद्धि जम् ॥ धने कृहा पुत्रिका
पूजा ॥ इति कुरवाय के ॥ कृहा अठिलि न्या के ॥ इति लाहाय
का य ॥ धने रवल क संकृष्ट ॥ पुत्रिका गस्य कृत्त क म्रद्व काय ॥
यथा पूर्व वा धि सत्व च पा यो न्य नरि मा ना पि ता पूर्व क संक
पूत्र धरि स संक नि धरि य पूष्म ना विहा ज ५५ धं का ५५ परम

अथ अस्मन् पञ्चमानस्य ॥ गि गं दू ल समा सा सुव ५५
५५ साद द्या स घृ ग सम धु त दधि सवी प के ज ५५ साहि ना
प अ य प्रा पि ना म ह पि ता म ह स्व पि ना य था ना धु ने कृ हा
५५ न कृ हा ५५ पुत्रिका कृ हा व स मू प नि षु गां ॥ कृ हा हो मा
लं र व ग था गि लो द क वि या ॥ प्र पि ता म ह पि ता म ह स्व पि
ना य था ना धु ने कृ हा म द क स्व था ॥ गि लो द क स्व था ॥
ग ह म द क स्व था ॥ सा पू ५५ ५५ के कं नि प्रा च नि ५५ प्रा च नि ५५

दत्त
प्रतिकर्म सर्व कर्म इयं क जी स्व धा ॥ पंचामृत विधा ॥
उं सगितां सव ७५ संभादद्या सद्युग समधु सुदधि स्वा
पकच ७५ सहिगाय स्व धा ॥ लंख विधा ॥ उ पुण्य महोप
७५ पत्रिमिग पुण्य पत्रिमिगा पू ७५ ज्ञान समुद्रा प
त्रिगा ॥ उं सर्व सस्का जपनि ७५ धर्म ग ग ग ७५ मुमुद्रा
लुगा वि ७५ महान पत्रिवा न स्व धा ॥ सिन्धु निका
उ चंदन चंदनानि वज्र पात्र मिगा पू म ध समुद्र ज ७५ स

मय स्व धा ॥ उकाच ह नागय ॥ यज्ञा वरु ७५ मील पा
त्र मिगा पूजा म ध समुद्र ज ७५ समय स्व धा ॥ गंला रि
ला छा यी ॥ गंगना उ रे गना ज पू ७५ शानि पात्र मिगा
पूजा म ध समुद्र ज समय स्व धा ॥ धर्म वज्र काय ॥ धर्म
चक्र ने वर्य दान पात्र मिगा पूजा म ध समुद्र ज ७५ स
मय स्व धा ॥ हल हल काय ॥ हल हल ग म ध ७५ उगा यी
जिं व रि हला य ॥ कर्कटी चूग ना ज ग न गानि हल ७५

षय ॥ ध्रुः सगविय ॥ द्विः श्राधाय हलर हल यर धूप दीप
 दान पात्र मित्रा पूजा मद्य समूद्र रु ज ७७ समय स्वध ॥ गा
 यत्र हलि ॥ ३ सर्व विगुला ऊ केला ऊ ७७ लि पात्र मित्रा पू
 जा मद्य समूद्र रु ज ७७ समय स्वध ॥ कि गे ना ॥ वि फान
 पुमहा धा ज ट फा या वे ग ज ७७ भी नदि ॥ ट फा या म धु सं व
 दा तं बुद्धं प्र ७७ माम्यह ॥ आरय ग वि ध ॥ ३ मू ने स्महा मु
 ने सुरवा व ग्या मिनु ग च नु स्वध ॥ जा किल रवे ऊ नि ३ सि
 या

कल्प ॥ यथा दीमानश्च न सकल्प सिद्धि ज रु ॥ गदनू पि ७७
 का ज य रु ॥ कृ ७७ सन पया से नू ॥ पूर्वा कि अया दिवा क प ७७
 १० रु ॥ यथा ग गथा गगाया पूर्व व रु ॥ प्रापिता म रु पिता म रु
 स पिता यथा नाम न कृ ७७ सन मूपा गि ७७ गा ॥ कृ ७७ सन प
 ने रु प ॥ वसुध नी पय पा प्रत्यः स्व धा ॥ लखन रु य ॥ अलि वि
 चा प्रत्यः स्व धा ॥ स्वा ऊ कि ग य ॥ सुपू व ग ७७ ल धा प्रत्यः स्व
 धा ॥ भिला रु वना ॥ मा धि पय पा प्रत्यः स्व धा ॥ यन पि ७७

ना ३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वाक् ॥ यजमानस्य क्वा ६५ परमार्थ ॥ पूर्ववादि
सत्त्ववर्षायां च जगि मागापि गृ पूर्वजामः सप्तः पूज्यवर्षः प्र
पूषमाणविहाज ६५ यका ६५ परमार्थ ॥ यत्र स्म गय जमानस्य
वृगे गन्तुला सगिला सदधि समधू स घृ ग सख ६५ सर्वापि क
६५ सहिगाय यदि सद्य प्रपच्छामि सकृ गार्थ गे ६५ लं प्रपच्छ
अपि प्रपि गामह यथा ना ननापि ६५ स्वध्या ॥ पिगामह यथा
नामि पि ६५ स्वध्या ॥ स्वपि गृ यथा नामि पि ६५ स्वध्या ॥ ॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript page. The text is written in black ink on aged, yellowish paper. The script is cursive and appears to be a form of Hindi or Sanskrit. The text is arranged in three horizontal lines, with some characters being larger and more prominent than others, possibly indicating emphasis or specific grammatical markers. The overall appearance is that of an old, handwritten document.

५८३॥ २॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥
५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥
५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥
५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥
५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥ ५८३॥